मैथ्यू आर्नल्ड के उत्तम साहित्य संबंधी विचार

- डॉ॰ मान सिंह

मैथ्यू आर्नल्ड को महान आधुनिक आलोचक कहा गया है क्योंकि आधुनिक अंग्रेजी आलोचना का आरंभ मैथ्यू आर्नल्ड से होता है। यद्यपि इन्होंने साहित्यिक जीवन का आरंभ काव्य-रचना से किया था तथापि स्वभाव और कर्म दोनों से वह पहले आलोचक थे, बाद में कवि। उनका मत था कि साहित्य और उनकी समस्याएँ जीवन की समस्याओं से अविच्छिन्न है, अतः साहित्य का मूल्यांकन जीवन के संदर्भ में होना चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने साहित्य को 'जीवन की आलोचना' कहा है। उनका मत था कि कवि की महानता इस बात में नहीं है कि उसने कला की दृष्टि से कितना महान साहित्य रचा है, अपितु इस बात में है कि उसके साहित्य ने युग की साहित्यिक और सामाजिक आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूरा किया है।

उत्तम साहित्य

आर्नल्ड की धारणा थी कि उत्तम-काव्य के लिए उसकी विषयवस्तु उदात्त होनी चाहिए और शैली भव्य। उनके अनुसार सारा महत्व कार्यिका, उसके रचन और निर्माण का है। सब कुछ विषय पर निर्भर है। सामयिक विषयों पर लिखे गए साहित्य को वे चिरस्थायी नहीं मानते। सामयिक विषयों की उपादेयता समाप्त हो जाने के बाद उनका महत्व भी समाप्त हो जाता है। अतः में ही स्वाधीनता आंदोलन की अवधि में बहुत सारी कविताएँ लिखी गईं, जो तब पर्याप्त लोकप्रिय थीं किन्तु आज इस तरह की कविताएँ सुनाई नहीं देतीं। इसलिए आर्नल्ड का यह कहना कि काव्य का विषय ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य के स्थायी भावों और संवेदनाओं से संबद्ध हो, असंगत नहीं है। काव्य में आधुनिकता या प्राचीनता का प्रश्न भी गौण है, महत्व का प्रश्न यह है कि उसमें स्थायित्व की क्षमता है या नहीं। स्थायित्व के अभाव में कोई भी रचना अभिजात कोटि में नहीं आ सकेगी। आर्नल्ड ने काव्य में विचारों के निरूपण के बदले कर्म-व्यापारों के निरूपण पर बल दिया। उन्होंने उत्तम काव्य के

Scanned with CamScanner

लिए कार्य-व्यापार की गुरुता, चरित्रों की उदात्तता और स्थितियों की तीव्रता को आवश्यक माना है। इनके अभाव में कोई भी काव्य स्थायित्व नहीं प्राप्त कर सकता।

उत्तम-साहित्य के लिए आर्नल्ड ने चार बातों पर ध्यान रखने का आग्रह किया है - (क) काव्य की विषय-वस्तु महत्वपूर्ण होनी चाहिए, जिसमें गहन और तीव्र भावों की संभावनाएँ हों। (ख) रचना-प्रक्रिया के क्रम में कवि को संरचनात्मक अन्विति, अनुपात तथा सुसंगति या सामंजस्य पर ध्यान रखना चाहिए। (ग) वर्णन में भव्य शैली का प्रयोग आवश्यक है। (घ) काव्य के प्रयोजन के रूप में आर्नल्ड ने आनन्द के साथ नैतिक उन्नयन को हमेशा आगे रखा। यद्यपि आर्नल्ड की भव्य-शैली की धारणा लोंगिनुस से ही गृहीत है, फिर भी दोनों में हल्का-सा अन्तर है। जहाँ लोंगिनुस ने भव्य-शैली में सरलता के साथ अभिव्यंजना की समृद्धि को महत्व दिया है, वहाँ आर्नल्ड ने सरलता के साथ संयम और सादगी को।

आर्नल्ड काव्य को सांस्कृतिक उन्नयन और परिष्करण का साधन मानते हैं। अतः उनके लिए काव्य केवल आनन्द का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उन्नयन का भी साधन है। उनका कहना था, यदि काव्य को, और उसके साथ संस्कृति को, बचाना है तो इस मध्यवर्ग को ही सुधारने की जरूरत है; इसी की रुचि को परिमार्जित और परिष्कृत करना है, क्योंकि अभिजात वर्ग बर्बर और निष्प्रभाव हो चुका है, मध्यवर्ग भोग में लीन है और निम्नवर्ग का अभी उत्थान ही नहीं हुआ है। इस स्थिति में सांस्कृतिक दृष्टि से उन्हें अभिजात वर्ग तथा निम्नवर्ग निरुपयोगी प्रतीत होते हैं; इनसे कोई आशा नहीं की जा सकती। यदि सांस्कृतिक उन्नयन की कहीं क्षीण आशा है तो मध्यवर्ग में।

आर्नल्ड ने उत्तम-साहित्य की परख के लिए 'निकष-पद्धति' की बात कही है। जैसे किसी वस्तु को तौलने के लिए बाट काम में लाये

जाते हैं, वैसे ही काव्य के महत्व और सौन्दर्य को आंकने के लिए भी महान् कवियों की रचनाओं से सौन्दर्य-संवलित उत्कृष्टतम पंक्तियाँ स्मरण रखनी चाहिए और किसी काव्य की उत्तमता की परीक्षा करने के लिए उन्हें ही निकष बनाना चाहिए। यदि परीक्ष्य काव्यवस्तु और अभिव्यंजना की दृष्टि से उन उत्कृष्टतम पंक्तियों के समकक्ष हो तो उसका उत्कर्ष स्वीकार किया जा सकता है।

मैथ्यू आर्नल्ड ने उत्तम-साहित्य के विषय में जो अपनी धारणाएँ प्रस्तुत की हैं, वह कुछ शंकाओं को जन्म देती हैं। प्रथम यह कि काल का उपयुक्त विषय प्राचीन ही हो सकता है, समसामयिक नहीं। दूसरा, आर्नल्ड ने कहा कि शैली में सरलता और सिद्धि आवश्यक है, पर उन्होंने यह नहीं बताया कि किन कारणों से कलाकृति में जटिल शैली का बहिष्कार किया जाए। तीसरा, निकष-पद्धति, क्योंकि कविता काव्य की किन्हीं भी पंक्तियों के संबंध में यह कैसे कहा जा सकता है कि वे ही पंक्तियाँ उत्कृष्टतम हैं। दो-चार पंक्तियाँ तो अति साधारण कवि की भी उत्कृष्ट हो जाती हैं और कभी-कभी भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न अंश उत्कृष्टतम प्रतीत हो सकते हैं।

— x —

Scanned with CamScanner